## बीएलएड पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में

# एक अच्छा शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम कैसे तैयार होता है?

सुवासिनी अय्यर

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा देश में शिक्षक-शिक्षा (teacher education) में बड़े पैमाने पर बदलाव की शुरुआत के प्रकाश में, हमें एक बुनियादी सवाल ज़रूर पूछना चाहिए, 'एक अच्छा शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम कैसे तैयार होता है?' इस सवाल का एक अन्य बुनियादी सवाल से निकट सम्बन्ध है, 'एक अच्छा शिक्षक कैसे तैयार होता है?' इस लेख में, मैं बैचलर ऑफ एलीमेंट्री एजुकेशन (बी.एल.एड.) कार्यक्रम, जो 1994 से दिल्ली विश्वविद्यालय में सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है, में एक शिक्षक-प्रशिक्षक के रूप में अपने अनुभवों का उपयोग करते हुए पहले सवाल का जवाब देने का प्रयास कर रही हूँ। इस कार्यक्रम में, जो विभिन्न

विषयों से शिक्षकों की भर्ती करता है, मैं मनोविज्ञान में मूलभूत पाठ्यक्रम पढ़ाती हूँ, जिससे उन्हें बाल विकास, अधिगम और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के बुनियादी सिद्धान्त समझने में सुविधा हो। मैं शिक्षक प्रशिक्षुओं की स्कूल इंटर्नशिप का पर्यवेक्षण भी करती हूँ, जहाँ मैं उन्हें समावेशी शिक्षण, मानवीय कक्षा प्रबन्धन और ऐसी ही अन्य छात्र-केन्द्रित प्रथाओं का पालन करने में सहायता करती हूँ। इस लेख में, जब मैं पहले सवाल को सम्बोधित कर रही हूँ, अप्रत्यक्ष रूप से मैं दूसरे सवाल का जवाब भी दे रही हूँ।

## आलोचनात्मक समझ और शिक्षण में सक्रिय भागीदारी

यह समझना कोई बड़ी बात नहीं है कि एक शिक्षक को विषय वस्तु की गहन, सही समझ होनी चाहिए। यह कक्षा-1 के शिक्षक के लिए उतना ही आवश्यक है, जितना बारहवीं कक्षा के शिक्षक के लिए है। हम पर्यावरण विज्ञान का कोई ऐसा शिक्षक नहीं रख सकते जो भलीभाँति यह नहीं जानता हो कि आकाश नीला क्यों है, या पौधे भोजन कैसे बनाते हैं। एक गणित शिक्षक को सम्भाव्यता सिद्धान्त की मूल बातें पता होनी ही चाहिए। लेकिन एक पेशेवर शिक्षक सहज बोध से अधिक जानेगा और अधिक करेगा - इस प्रक्रिया में वह लगातार विषय वस्तु को वास्तविक दुनिया से जोड़ेगा, जिससे बच्चों की जिज्ञासा बढ़ेगी। वह विषय की पाठ्यपुस्तकों के साथ गम्भीरता से जुड़ेगा और पाठ्यपुस्तक में किसी भी तरह की खामियों के प्रति सतर्क एवं सजग रहेगा। पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम विवरण विकास के बारे में उसकी सुविचारित राय होगी। एक पेशेवर के रूप में, वह अपने विषय ज्ञान को आगे बढ़ाने में सक्षम और इच्छुक होगा। सबसे बढ़कर, शिक्षक अपने विषय की भावना को आत्मसात कर चुका होगा। एक विज्ञान शिक्षक अपने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक मूल्यों का विकास करेगा। वह विद्यार्थी द्वारा कक्षा में चर्चा में पेश किए जाने वाले किसी भी अन्धविश्वास पर तर्क करेगा। एक साहित्य शिक्षक कविता पढ़ाते समय सौन्दर्य सम्बन्धी संवेदनाएँ पैदा करेगा।

एक अच्छा शिक्षक लगभग हमेशा अपने विषय से प्यार करता है। वह अपना शिक्षण कार्य करते हुए प्रसन्न रहता है, और अपने विद्यार्थियों में वैसा ही जुनून पैदा करता है। इसलिए, अपने नाम के अनुरूप, कोई भी शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो प्रशिक्षु शिक्षक को विषय में संलग्न रहते हुए, गम्भीरतापूर्वक और आलोचनात्मक रहते हुए तल्लीन रहने का अवसर प्रदान करे। इसके बिना, शिक्षक-शिक्षा स्कूली शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से विफल कर देगी। बी.एल.एड. में, जो कक्षा-1 से

8वीं के लिए शिक्षकों को तैयार करता है, स्कूली विषयों पर पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या के अभिन्न अंग होते हैं।

## शिक्षाशास्त्र से साथ-साथ पढ़ाने के तरीके का प्रशिक्षण

1990 के दशक से, भारतीय शिक्षाविद् इस सवाल को लेकर चिन्तित रहे हैं कि कई वर्षों की स्कूली शिक्षा के बावजूद, बच्चे अधिगम में असफल क्यों होते हैं। यह तब भी स्पष्ट था, जैसा कि अब भी है (जैसे कि वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट [ASER] नियमित रूप से गवाही देती है), कि नियमित रूप से स्कूल जाने के बावजूद, बड़ी संख्या में बच्चे प्रभावी ढंग से पढ़ना, लिखना और अंकगणित नहीं सीख पाते हैं। कोरोना काल में स्कूलों के बन्द होने से समस्या काफी बढ़ गई है। वर्षों से, शिक्षाविदों ने इन पर और सम्बन्धित मुद्दों पर विचार-विमर्श किया है - क्या बच्चों को कक्षा-शिक्षण सार्थक लगता है? क्या स्कूली शिक्षा बच्चे को उपयोगी तरीके से अपनी दुनिया को समझने और उससे जुड़ने में मदद करती है? हमें कौन-सी शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए ताकि बच्चे पढ़ने, लिखने, पाठ समझने, गणित समझने आदि में सक्षम हों?

उन्होंने कई विषयों से उपलब्ध ज्ञान की ओर रुख किया - मनोविज्ञान, शैक्षणिक अध्ययन, शिक्षा, भाषा विज्ञान, साथ ही देश भर में स्कूली शिक्षा में नवीन, प्रायोगिक अभ्यास (*दिगन्तर शिक्षा एवं खेलकूद समिति* और *एकलव्य फाउण्डेशन* के कार्य, इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं)। स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में ऐसे सैद्धान्तिक कार्यों और वास्तविक जीवन के प्रयोगों से, शिक्षाविदों ने कुछ बुनियादी सिद्धान्त प्राप्त किए हैं, जिन्हें किसी भी शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम में मार्गदर्शक की भूमिका निभानी चाहिए। इन सिद्धान्तों में शामिल हैं -

- बच्चे हमेशा अपना पूर्व अर्जित ज्ञान एक नए अधिगम के अनुभव में शामिल करते हैं,
- ब्लैकबोर्ड/पाठ्यपुस्तक पर जो लिखा जाता है, वह अपने आप से बच्चों के दिमाग पर अंकित नहीं होता है,
- उन्हें जानकारी को संसाधित करने, सक्रिय रूप से इसका अर्थ निकालने की आवश्यकता होती है, तभी यह नई जानकारी वास्तव में उनकी हो पाती है, जिससे वे जुड़ सकें और वास्तविक जीवन में उसका उपयोग कर सकें।
- जब भाषा की बात आती है, तो मनुष्य मौखिक भाषा(ओं) को बोलने और समझने की जैविक क्षमता से सुसज्जित रहते हैं - शिक्षण इस जैविक प्रवृत्ति पर आधारित होना चाहिए।

जब यह परिसीमा उजागर की

जाती है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षक-शिक्षा को तदनुसार भावी शिक्षकों को तैयार करना होगा। हमारी संस्कृति में तो और भी अधिक, जहाँ आज भी, एक स्कूल शिक्षक के लिए बोर्ड पर लिखना और छात्रों द्वारा बिना सोचे-समझे उसकी नकल करना आम बात है। पिछले कुछ वर्षों में, मैंने कई स्कूली बच्चों को बिना किसी सुराग के ब्लैकबोर्ड से नकल करते देखा है। वे न तो लिखित पाठ को समझ सकते थे, न ही उस अर्थ को जो उस पाठ के माध्यम से व्यक्त करने की कोशिश की जा रही थी।

बी.एल.एड. में, हम छात्रों को मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र के विभिन्न शोधपत्रों से परिचित कराते हैं, ताकि उनमें यह बुनियादी, अनुल्लंघनीय सिद्धान्त गहराई से जड़ें जमा सके। हमारे छात्र मनोविज्ञान की किताबों में पढ़ते हैं कि बचपन/शैशवकाल से वयस्कता तक बच्चों की सोच कैसे विकसित होती है। ऐसे पाठ्यक्रम हैं जो इस बात पर केन्द्रित हैं कि कैसे सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ बच्चों के बढ़ने और सोचने के तरीके को आकार देते हैं। सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के साथ व्यावहारिक पाठ्यक्रम होते हैं, जिनमें विद्यार्थी स्कूलों और अन्य सेटिंग्स में और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को देखते हैं और उनके साथ संवाद करते हैं। मनोविज्ञान पाठ्यक्रम शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रमों की ओर ले जाते हैं, जहाँ इन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को इस्तेमाल करते हुए विभिन्न विषयों में शैक्षणिक प्रथाओं को बदलने पर ज़ोर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, प्राथमिक वर्षों में गणित सीखने में बच्चों द्वारा वस्तुओं के साथ काम करना शामिल हो सकता है, जैसे- दशमलव प्रणाली की मूल बातें समझने के लिए, दस के समूहों में आइसक्रीम स्टिक जमाना। सामाजिक विज्ञान में, किसी ऐतिहासिक काल के बारे में सीखने में उस काल की घटनाओं का नाटकीय अभिनय या वृत्तचित्र देखना शामिल हो सकता है। हालाँकि, अन्तिम परीक्षा प्रदर्शन आधारित होती है। एक अच्छी शिक्षक-शिक्षा में एक गहन कड़ी इंटर्नशिप होगी, जिसमें प्रशिक्षुओं को सीखी गई बातों का अभ्यास करने, गलतियाँ करने, इन गलतियों पर विचार करने और एक लूप अभ्यास में पर्याप्त लम्बे समय तक बने रहने का अवसर मिलेगा। जिस तरह अस्पताल से जुड़े बिना डॉक्टरों के प्रशिक्षित होने की कल्पना करना असम्भव है, उसी तरह स्कूल इंटर्नशिप के बिना शिक्षक तैयार किए जाने की कल्पना करना भी उतना ही असम्भव है। इसके अलावा, प्रशिक्षु शिक्षकों को स्कूल प्रणाली में डाल देना ही पर्याप्त नहीं है - बारीकी से, नियमित रूप से उनके पर्यवेक्षण करने की आवश्यकता होती है। बी.एल.एड. में, एक या

अधिक पर्यवेक्षकों द्वारा प्रत्येक प्रशिक्षु का साप्ताहिक पर्यवेक्षण करना, हर एक प्रशिक्षु की शिक्षण योजना पर व्यक्तिगत फीडबैक देना, और विद्यार्थी द्वारा दैनिक स्कूल अनुभव पर अपने विचार लिखना, और बदले में उस पर शिक्षक प्रशिक्षकों से फीडबैक प्राप्त करना शामिल है।

## मानवीय दृष्टिकोण

सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि शिक्षक बच्चों के बीच मौजूद एक वयस्क होता है - उनके जीवन में एक महत्वपूर्ण, शक्तिशाली मौजूदगी। बच्चे अपने शिक्षकों को करीब से देखते हैं, उनका अनुकरण करते हैं और उत्सुकता से उनका ध्यान और प्यार पाना चाहते हैं। गुस्सैल स्वभाव वाला एक अच्छा गणित शिक्षक छात्रों को गणित नहीं, बल्कि विषय से डरना सिखाता है।

शिक्षक बच्चों की भावनात्मक स्थिति को प्रतिदिन पूरे 6 से 8 घण्टे तक प्रभावित करते हैं और बनाए रखते हैं - कई वर्षों की लम्बी अवधि तक। माता-पिता के रूप में हमें पूछना चाहिए – यह भावनाएँ क्या होनी चाहिए - खुश, तनावमुक्त, सतर्क, भाग लेने की इच्छा करना, आत्मविश्वास महसूस करना, गलतियाँ करने से नहीं डरना, और सबसे महत्वपूर्ण - अगले दिन और हर दिन स्कूल जाने की इच्छा रखना? या भयभीत, चिन्तित, लज्जित महसूस करना, बोलने से डरना कि कहीं उसे दण्डित न कर दिया जाए? निश्चित रूप से, स्कूल में बच्चे भावनात्मक और सामाजिक रूप से किस स्थिति से गुज़रते हैं, यह कुछ हद तक उनके सहपाठियों पर निर्भर करता है। लेकिन, शिक्षक सर्वोच्च होता है - वह बदमाशों को सुधारने/ठीक करने, किसी उदास बच्चे को हँसाने की शक्ति रखता है, और वह किसी कम आत्मविश्वासी बच्चे में आत्मविश्वास पैदा कर सकता है। मैंने बार-बार देखा है कि कैसे किसी शिक्षक की एक सामान्य टिप्पणी - 'हाँ, तुम सही हो' - किसी छोटे बच्चे को इतने उत्साह और ऊर्जा से भर देती है कि वह शिक्षक की आज्ञा का पालन

करता है, समय पर अपना होमवर्क पूरा करता है और एक बार फिर उसके सवालों का जवाब देने के लिए अपना हाथ उठाता है। मैंने बच्चों को अपने दोस्तों के सामने अपने प्रिय शिक्षक द्वारा दिए गए एक साधारण नोटबुक रिमार्क 'गुड' का प्रदर्शन करते देखा है। मैंने ऐसे किस्से भी सुने हैं कि कैसे एक शिक्षक के नकारात्मक रवैये के कारण छात्र किसी विषय से विमुख हो गए। हमने शिक्षकों द्वारा किए जाने वाले दुर्व्यवहार के बारे में पढ़ा है, जो देश के स्कूलों में इतना दुर्लभ नहीं है।

शिक्षक के साथ सम्बन्ध बनाने का मुद्दा किशोर छात्रों के लिए और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। इन वर्षों के दौरान, जब वे अत्यधिक संवेदनशील होते हैं, उन्हें किसी ऐसे शिक्षक की आवश्यकता होती है जो उचित ढंग से प्रतिक्रिया देना जानता हो। दूसरी ओर हम जानते हैं कि कोई असंवेदनशील टिप्पणी करने, कोई कठोर सज़ा देने पर किशोर विद्रोह करने और आत्मघाती तरीकों की ओर मुड़ने में ज़्यादा देर नहीं करते हैं।

मेरा कहना यह है कि किसी भी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षुओं को भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक विकास के क्षेत्र में शिक्षित किया जाना होता है और विकास के वर्षों के दौरान बच्चों में पाई जाने वाली कमज़ोरियों के प्रति उन्हें संवेदनशील बनाया जाना होता है। ऐसी शिक्षा को सैद्धान्तिक शिक्षा से परे जाना होता है - क्योंकि, प्रशिक्षु शिक्षक को बच्चों के प्रति वास्तविक संवेदनशीलता विकसित करनी होगी, उनके साथ अपने दैनिक व्यवहार में

धैर्य दिखाना होगा, गलत व्यवहार को बच्चे के दृष्टिकोण से सहानुभूतिपूर्वक समझना होगा और बच्चों के बीच संघर्षों को सुलझाने की कला में महारत हासिल करना होती है। पाठ्यक्रम कवरेज, या बड़े लक्ष्य - कि बच्चे अच्छी तरह से सीखें - को नज़रअन्दाज़ किए बिना, उसे यह सब चतुराई से करना होता है। शिक्षक प्रशिक्षु को अपनी भावनाओं - क्रोध, अधीरता, चिढ़ - को नियंत्रित करना सीखना होता है, जिनमें से कुछ 'स्वाभाविक' हो सकती हैं लेकिन कक्षा में इनका प्रदर्शन बेहद गैर-पेशेवर होगा।

बाहर से स्कूल और कक्षाएँ शान्त स्थान दिखाई देते हैं, लेकिन माता-पिता और शिक्षकों के रूप में, हम जानते हैं - स्कूल और कक्षाएँ सामाजिक और भावनात्मक रूप से जटिल होते हैं, और कई बच्चे इन स्थानों पर संघर्ष करते हैं। धमकाना और लेबलिंग करना स्कूली बच्चों के बीच शायद ही असामान्य है। शिक्षक बच्चों के बीच मौजूद रहने वाला एक ऐसा शक्तिशाली वयस्क होता है जो उनके स्कूल के अनुभव को बना या बिगाड़ सकता है। और यह बहुत बड़ी बात है!

एक अच्छी शिक्षक-शिक्षा को प्रशिक्षु की क्षमता का निर्माण करना होता है, ताकि वह इन भावनात्मक और सामाजिक चुनौतियों के लिए तैयार हो सके। 20वीं सदी के अन्तिम दशक में विकसित बी.एल.एड. पाठ्यक्रम में संवाद और मानवीय सम्बन्धों के मुद्दों को सम्बोधित करने वाले पाठ्यक्रमों को शामिल करने की दूरदर्शिता थी। इसमें एक व्यावहारिक पाठ्यक्रम भी शामिल है जिसमें शिक्षार्थी अपने स्वयं के भावनात्मक और सामाजिक पालन-पोषण पर गहराई से नज़र डालते हैं, और उन्हें ऐसा इन्सान और शिक्षक बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो दयालु हो।

## जेंडर सम्बन्धी संवेदनशीलता, और संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान

16 दिसम्बर 2012 को, एक युवा महिला के साथ हुए क्रूर बलात्कार और उसकी हत्या की चौंकाने वाली खबर ने देश को झकझोर दिया। यह भयावह था कि सामान्य, युवा पुरुष इतने बर्बर हो सकते हैं। जब हमने उस युवती की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया, तब यह भी स्पष्ट हो गया कि हमारे लड़कों और नवयुवकों को महिलाओं का सम्मान करने के लिए शिक्षित करने की तत्काल आवश्यकता है। दुर्भाग्य से, 2012 के बाद से, देश में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में कोई कमी नहीं देखी गई है, जिससे यह चिन्ताएँ और भी गम्भीर हो गई हैं।

यदि यह चिन्ता का विषय है (और निश्चित रूप से ऐसा है), तो स्कूल शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा

सकते हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें जेण्डर सम्बन्धी मुद्दों की मूलभूत समझ हो। बी.एल.एड. कार्यक्रम में जेण्डर पर एक अनिवार्य पाठ्यक्रम शामिल है, और जेण्डर-संवेदनशील दृष्टिकोण अन्य पाठ्यक्रमों में भी एकीकृत किए गए हैं। पाठ्यक्रम निर्धारण में इतनी दूरदर्शिता शायद ही आकस्मिक थी। बी.एल.एड. पाठ्यक्रम देश के बेहतरीन बुद्धिजीवियों के सामूहिक प्रयासों का नतीजा था, जिनमें अपने-अपने विषयों से सम्बन्धित 5-5 अग्रणी सामाजिक वैज्ञानिक भी शामिल थे। और छात्रों के जेंडर के बारे में हमारे शिक्षक प्रशिक्षु गहराई से अध्ययन करते हैं। वे अपनी छात्राओं को कैसे समझाएँगे कि वे एसटीईएम (STEM) पाठ्यक्रमों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकती हैं? या किशोरों के बीच उभरती जेण्डर सम्बन्धी और लैंगिक चिन्ताओं पर स्कूल परामर्शदाताओं और विशेषज्ञों के साथ प्रतिक्रिया देंगे? ऐसी शिक्षा के बिना, स्कूली शिक्षक दुनिया को हिंसा मुक्त बनाने में कैसे योगदान दे सकते हैं, जैसी कि दिसम्बर 2012 में हुई थी?

सिर्फ जेण्डर ही नहीं, एक स्कूल शिक्षक को कई समसामयिक मुद्दों की समझ भी होना चाहिए। वह ऐसा पेशेवर होना चाहिए जो संवैधानिक मूल्य आत्मसात कर चुका हो, जो उसके शिक्षण कार्य में प्रतिबिम्बित होने चाहिएं। एक शिक्षक को सिर्फ यही पता होना पर्याप्त नहीं है कि शारीरिक दण्ड अवैध है, उसे कभी भी छड़ी इस्तेमाल करने की ज़रूरत महसूस नहीं होनी चाहिए। एक पेशेवर के रूप में, उसे किसी विद्यार्थी को किसी विशेष समुदाय पर कीचड़ उछालते हुए सुनकर व्याकुलता/परेशानी महसूस होनी चाहिए। एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को मूल्यों से परिचित कराता है। और ये सही मूल्य होने चाहिए।

## निष्कर्ष

एक अच्छा शिक्षक तैयार करना कोई त्वरित सुधार/समाधान कार्य नहीं है। इसमें समय लगता है। स्कूली शिक्षक एक पेशेवर होता है, और ऐसा बनने के लिए उसे गहन विशेष अध्ययन कार्यक्रम पूर्ण करना होता है। वर्तमान में, देश में विभिन्न प्रकार के शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम हैं, जिनमें से सभी की प्रक्रिया में दो से चार साल लग जाते हैं। हम समझ सकते हैं कि इतना समय क्यों चाहिए। उदाहरण के लिए, बी.एल.एड. के मामले में, राष्ट्रीय शिक्षक-शिक्षा परिषद (NCTE) निर्धारित करती है कि प्रत्येक वर्ष न्यूनतम 200 कार्य दिवस होने चाहिए, जिसमें कम-से-कम 36 घण्टे साप्ताहिक अध्ययन और न्यूनतम 20 कार्य सप्ताह की अवधि की स्कूल इंटर्नशिप होनी चाहिए।

मुद्दा यह है कि, स्कूल शिक्षक

जल्दबाज़ी में तैयार करने की नहीं; बल्कि अच्छी तरह से तैयार करने की ज़रूरत है। राष्ट्रीय शिक्षक-शिक्षा परिषद द्वारा प्रस्तावित नए शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में चार साल का एक शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और साथ ही स्नातक बी.ए./बी.एससी./बी.कॉम. पाठ्यक्रम शामिल हैं। ऐसा एकीकृत मॉडल निश्चित रूप से शिक्षक प्रशिक्षण घटक और स्नातक पाठ्यक्रम, दोनों को कमज़ोर करेगा। यह स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम के उद्देश्य जो चार साल के बी.एल. एड. कार्यक्रम के माध्यम से पूरे किए जाते हैं, उन्हें उतने ही वर्षों में इन दोहरे डिग्री कार्यक्रमों के माध्यम से हासिल नहीं किया जा सकता है।

हमारे आसपास की बदलती दुनिया पर प्रतिक्रियास्वरूप, शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में बदलाव की निस्सन्देह आवश्यकता है। लेकिन उनका तर्कसंगत आधार होना चाहिए और वे मौजूदा परम्पराओं की समझ पर आधारित होने चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि राष्ट्रीय शिक्षक-शिक्षा परिषद ने सुझाव दिया है कि शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में जलवायु परिवर्तन और सतत विकास पर अनिवार्य पाठ्यक्रम शामिल हों तो मैं यह समझ सकती हूँ। राष्ट्रीय शिक्षक-शिक्षा परिषद द्वारा प्रस्तावित वर्तमान परिवर्तनों के साथ समस्या यह है कि हम इन परिवर्तनों के लिए कोई ठोस आधार नहीं देख पाते हैं। इसके अलावा, वे वर्षों से अर्जित ज्ञान के विपरीत चलते हैं। एक नीतिगत आदेश के साथ, वह काम चौपट हो सकता है जो बी.एल.एड. सहित देश में सार्थक शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम तैयार करने के लिए हुआ है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि स्कूली शिक्षा से जुड़ा कोई भी व्यक्ति परेशान हो जाएगा।

---

**सुवासिनी अय्यर:** प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। एक शिक्षक-शिक्षिका के रूप में इन्हें 20 वर्षों से अधिक का अनुभव है। इनकी शैक्षणिक रुचि शिक्षा के समाजशास्त्र के क्षेत्र में है।

**अँग्रेज़ी से अनुवाद: सुबोध जोशी:** स्वतंत्र रूप से अनुवाद करते हैं। अखबार और पत्रिकाओं में विभिन्न विषयों पर लेख लिखते हैं और विभिन्न संस्थाओं के लिए अनुवाद कार्य करते हैं। सम्पादकीय कार्य का भी अनुभव। विकासात्मक विकलांगताओं पर आपकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। आप स्वयं मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी से प्रभावित हैं।

**सभी चित्र: प्रभाकर डबराल:** पेशे से चित्रकार, प्रकृति प्रेमी, कहानीकार और डिज़ाइन शिक्षक हैं। लोगों की उत्पत्ति की कहानियाँ सुनना बहुत पसन्द करते हैं। स्वतन्त्र चित्रकारी करते हैं। समानुभूति, करुणा और आत्म-साक्षात्कार फैलाने में सहायक बनकर अपने जीवन को जीने लायक बनाना चाहते हैं।